अर्थ एवं अवधारणा

पाठ संरचना

1.0 उद्देश्य
1.1 भूमिका
1.2 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अर्थ
1.3 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का क्षेत्र
1.4 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का महत्व
1.5 21वीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का परिवर्तित स्वरूप
1.6 सारांश
1.7 अभ्यास प्रश्न

1.0 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

1. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के बारे में जान सकेगे।
2. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अर्थ समझ सकेगे।
3. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र के बारे में जान सकेगे।
4. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का महत्व समझ सकेगे।
5. 21वीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का परिवर्तित स्वरूप की जानकारी प्राप्त होगी।

Scanned with CamScanner

1.1 भूमिका

वर्तमान युग अन्तर्राष्ट्रीयता का युग है, अर्थात् हम सभी एक–दूसरे पर आश्रित हैं। अतएव सभी देशों के मध्य अनेक प्रकार के सम्बन्धों का निर्माण होता है। वर्तमान उन्नत वैज्ञानिक युग में देश और काल की सीमाएँ यथावत् होने पर देशों के मध्य दूरियाँ सिमट गई हैं। विश्व के किसी भाग में घटित घटना का प्रभाव सभी पर पड़ता है। ईरान–इराक के मध्य हुए युद्ध का या श्रीलंका में हुई अशांति का या अफगानिस्तान समस्या का या मालद्वीप में सरकार का तख्ता पलटने के षडयंत्र का प्रभाव सम्बन्धित देशों तक सीमित न रहकर विश्व के अन्य सभी राष्ट्रों पर किसी न किसी रूप में पड़ा है। इसीं प्रकार विश्व के किस भाग में कौन–सा महत्वपूर्ण घटना घटी है, का प्रभाव अन्य देशों पर पड़ना स्वाभाविक है।

वर्तमान विश्व के सभ्य राष्ट्र एक–दूसरे की वैज्ञानिक तथा तकनीकी, आर्थिक व सामाजिक, राजनीतिक एवं संस्कृतिक और व्यापारिक उपलब्धियों में सहभागिता के इच्छुक हैं, वे एक दूसरे से कुछ पाना और उसी क्रम में कुछ देना चाहते हैं। विश्व के समस्त राज्य, चाहे वे शक्तिशाली हों या दुर्बल, किसी न किसी प्रकार एक दूसरे के निकट हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अभिप्राय उन सम्बन्धों से है, जो कि राष्ट्रों के मध्य है।

1.2 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अर्थ

सर्वप्रथम 'अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध' का प्रयोग जैरमी बेन्थम ने किया था। उसके पश्चात् इस शब्द का प्रयोग सम्प्रभु देशों के बीच स्थापित सरकारी सम्बन्धों को परिभाषित करने हेतु किया जाने लगा। यद्यपि कुछ विद्वान अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अन्तर्गत राष्ट्रों के मध्य सामाजिक आर्थिक तथा सम्ब्न्धों को भी सम्मिलित करने लगे थे। इस आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की विषय–वस्तु से सम्बन्धित दो दृष्टिकोण प्रचलन में आये– (i) संकुचित दृष्टिकोण तथा (ii) व्यापक दृष्टिकोण।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के संकुचित दृष्टिकोण को मानने वाले विद्वानों का यह मत है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अन्तर्गत स्वतन्त्र तथा सम्प्रभु राष्ट्रों के केवल उन्हीं

Scanned with CamScanner

सम्बन्धों को शामिल किया जाना चाहिये जिनका संचालन इन देशों के सत्ताधारियों द्वारा किया जाता है।

प्रो० डन उपरोक्त संकुचित दृष्टिकोण को अपनाते हुये अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को परिभाषित करते हुये कहते है "वे वास्तविक सम्बन्ध जो कि राष्ट्रीय सीमाओं के पार स्थापित होते हैं अथवा उन सम्बन्धों के विषय में वह ज्ञान जो निश्चित समय पर प्राप्त होता है।"

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विस्तृत दृष्टिकोण को अपनाने वाले विद्वान यह मानते है कि राजकीय सम्बन्धों के अलावा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अन्तर्गत राज्यों के बीच स्थापित होने वाले सभी प्रकार के सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। उक्त विस्तृत दृष्टिकोण का समर्थन करने वाले विद्वानों **क्विन्सी राइट** तथा **स्टेनले हॉफमैन** के अनुसार, "अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध उन तत्वों और गतिविधियों से सम्बन्धित होते हैं, जिनसे बाह्य नीतियाँ प्रभावित होती है, जिनमें विश्व विभाजित है।"

जेम्स रोजनो ने कहा है कि "राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के बीच कोई सीमा रेखा खींचना ही बहुत कठिन कार्य है।"

अतः संक्षेप में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अन्तर्गत विभिन्न देशों के मध्य सरकारी सम्बन्धों का ही अध्ययन नहीं किया जाता, बल्कि इनके अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण समूहों द्वारा निर्देशित तथा संचालित उन सम्बन्धों का भी अध्ययन किया जाता है, जिनका प्रभाव सम्प्रभु देशों पर अवश्य होता है।

1.3 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का क्षेत्र

बदलते समय के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र में भी व्यापक परिवर्तन तथा वृद्धि हुई है। आरम्भ में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन कूटनीतिक इतिहास तथा स्थानीय व क्षेत्रीय समस्याओं का ज्ञान प्राप्त करने तक ही सीमित था। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अन्तर्गत विभिन्न देशों के बीच केवल राजनीतिक सम्बन्धों का

Scanned with CamScanner

ही अध्ययन किया जाता था तथा सम सामायिक वैदेशिक सम्बन्धों का अध्ययन केवल मात्र इस दृष्टिकोण से किया जाता था कि कुछ निष्कर्ष पर पहुँचा जा सके, लेकिन इसके पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय कानून का अध्ययन भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अन्तर्गत किया जाने लगा। राष्ट्र संघ की स्थापना के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के अन्तर्गत किया जाने लगा। राष्ट्र संघ की स्थापना के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का अध्ययन भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अन्तर्गत आ गया। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व पटल पर अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन अमेरिका तथा सोवियत संघ का महाशक्तियों के रूप में उदय, परमाणु युद्ध का खतरा, अनेक पराधीन राष्ट्रों को स्वतन्त्रता की प्राप्ति, राष्ट्रों के मध्य बढ़ती हुई आत्मनिर्भरता तथा विकासशील देशों में जनमत की आकांक्षाओं में वृद्धि आदि दृष्टिगत हुये, जिनके कारण अर्न्राष्ट्रीय सम्बन्धों का क्षेत्र और अधिक व्यापक हो गया।

अब अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के वैज्ञानिक अध्ययन पर विशेष जोर दिया जाने लगा जिससे इसके नवीन सिद्धान्तों तथा पद्धतियों का प्रतिपादन हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद परिवर्तित नवीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न देशों की सैनिक नीतियों के साथ–साथ उनके नेतृत्व के व्यवहार तथा क्षेत्रीय अध्ययनों को भी विशेष महत्व दिया जाने लगा। वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, अर्न्राष्ट्रीय संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय कानून, कूटनीतिक इतिहास, क्षेत्रीय अध्ययनों तथा मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारवादी अध्ययनों को भी शामिल किया जाने लगा है। आज एक स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध विकसित हो चुका है लेकिन फिर भी कुछ विद्वानों की राय में यह अभी भी राजनीति विज्ञान या इतिहास का ही एक अंग है। इस मान्यता के पीछे तर्क यह दिया जाता है कि एक अनुशासन होने के लिये विषय सामग्री के क्षेत्र में एकता, अध्ययन में वस्तुनिष्ठता तथा क्षेत्र के सम्बन्ध में सर्वसम्मति का होना अति–आवश्यक है, जबकि इन सभी विशेषताओं का अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में अभाव पाया जाता है। अभी भी बहुत से विद्वान अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के क्षेत्र के विषय में एकमत नहीं हैं तथा राजनीति विज्ञान और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के मध्य स्पष्ट विभाज्य रेखा भी नहीं खींची जा सकती है क्योंकि दोनों की अनुशासन सम्प्रभु राष्ट्रों तथा उनके व्यवहार से सम्बन्धित हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध में वस्तुनिष्ठता की भी

Scanned with CamScanner

कमी है, क्योंकि इसके अध्ययन के समय अध्ययनकर्त्ता स्वयं के मूल्यों से बहुत प्रभावित रहता है। वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध को एक पूर्ण अनुशासन का रूप प्रदान करने के प्रयास निरन्तर जारी हैं।

1.4 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का महत्व

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का महत्व अनेक प्रकार से समझा जा सकता है। वस्तुतः अर्न्राष्ट्रीय सम्बन्धों के आधार पर ही वर्तमान राज्य का जीवन और भविष्य निर्भर करता है। यदि एक राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अपने सम्बन्धों का निर्माण भली प्रकार कर लेता है तो अपने महत्व में वृद्धि करने के साथ ह ीवह अपने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा व्यापारिक हितों का संवर्द्धन भी कर लेता है। किसी राज्य के राष्ट्रीय हितों का संवर्धन तथा सुरक्षा इस बात पर सर्वाधिक निर्भर करती है कि वह राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर अपने सम्बन्धों का महत्व निम्न प्रकार है–

1. **मानव प्रगति तथा सुरक्षा**– अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन मानव तथा उसकी सुरक्षा से सम्बन्धित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह इस बात के लिए प्रेरणा प्रदान करता है कि एक राष्ट्र वर्तमान परिस्थितियों में किस प्रकार से कार्य करके राष्ट्र और मानव की सुरक्षा तथा प्रगति में अभिवृद्धि कर सकता है, जिससे अर्न्राष्ट्रीय मैत्री भाव में वृद्धि हो सके।
2. **विश्व बन्धुत्व की भावना**– राष्ट्र अथवा राष्ट्रवाद की भावनाएँ प्रायः समस्त राष्ट्रों में विद्यमान रहती हैं लेकिन इससे ऊपर उठकर सम्पूर्ण विश्व को एकरूप करके देखने की भावना का विकास अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन से होता है। यही भावना 'एक विश्व' या 'वसुधैव कुटुम्बकम' का आधार है।
3. **राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा**– अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन तथा निर्माण में केन्द्र बिन्दु के रूप में राष्ट्रीय हित सम्मिलित होते हैं। राष्ट्रीय हित में राष्ट्र की सुरक्षा तथा प्रगति को प्राथमिक मान लेने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का कुशलतापूर्वक संचालन करने वाले राष्ट्र आज के वर्तमान संघर्षपूर्ण जटिल विश्व में उपरोक्त दोनों राष्ट्रीय हितों राष्ट्र की सुरक्षा तथा प्रगति की प्राप्ति में सफल होते हैं।

Scanned with CamScanner

4. **युद्ध और शान्ति का अध्ययन–** अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन में अधिक ध्यान युद्ध को टालने तथा शान्ति की स्थापना और उसे बनाये रखने की समस्याओं की ओर दिया जाता है। वर्तमान में हमारे लिए युद्ध और शांति का अध्ययन पहले की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण विषय बन गया है, इसका कारण यह है कि युद्ध का स्वरूप 'सम्पूर्ण युद्ध' का हो गया है। अतः यह हमारे अस्तित्व का प्रश्न बन गया है। अर्न्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन करके वर्तमान विश्व इस प्रकार की परिस्थितियों का निर्माण कर सकता है, जिनमें कि सम्भावित तृतीय विश्व युद्ध या तो रोकने में सफलता मिले या फिर उसे एक लम्बे समय के लिए टाला जा सकें।

5. **आर्थिक व सामाजिक विकास–** अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की स्थापना के द्वारा देश अपने आर्थिक व सामाजिक विकास में अग्रसर होते हैं। राष्ट्रों के मध्य आर्थिक सम्बन्धों का निर्माण परस्पर व्यापार के द्वारा अथवा एक–दूसरे को आर्थिक सहायता देकर किया जाता है। राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध विद्यमान होने के कारण ये प्रयास सफल हो सकते हैं। अविकसित, अर्द्धविकसित एवं विकासशील अर्थात् पिछड़े हुए राष्ट्रों को, उन्नत या विकसित राष्ट्र, उनके सामाजिक विकास में विभिन्न प्रकार के सहयोग प्रदान करते हैं।

6. **राष्ट्रों की वैदेशिक नीति–** अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन से निम्न ज्ञान की प्राप्ति होती है–

(i) राष्ट्र को सम्पूर्ण विश्व में होने वाली राजनीतिक गतिविधियों का ज्ञान प्राप्त होता है।

(ii) वह राष्ट्र उन गतिविधियों व हितों के आधार पर अपने सम्बन्धों का निर्माण करता है।

(iii) दूसरे राष्ट्रों के साथ किस प्रकार की नीति अपनानी चाहिए, इस बात का दिशा–निर्देशन भी प्राप्त होता है।

(iv) उसे यह ज्ञात होता है कि किस राष्ट्र के साथ सामान्य सम्बन्ध रखने चाहियें अथवा कौन से राष्ट्र के साथ अपेक्षाकृत मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना करना हितकर होगा।

Scanned with CamScanner

अपर्युक्त मार्ग–दर्शन होने के कारण सम्बन्धित राष्ट्र अपनी विदेश नीति का निर्माण कर लेता है।

1.5 21वीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का परिवर्तित स्वरूप

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के स्वरूप में निरन्तर परिवर्तन आ रहा है। पहले अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति यूरोपीय राज्यों तक सीमित थी किन्तु अब एशियाई व अफ्रीकी राज्यों की समस्याओं तक इसके क्षेत्र का विस्तार हो गया है। अत्यधिक जनसंख्या–वृद्धि ने भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। अपने सीमित साधनों के साथ राष्ट्रों को बेरोजगारी व निर्धनता जैसी समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। परमाणु शक्ति के विकास से अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तनाव के दौर से गुजर रही है। विश्व शक्ति–सरंचना निरन्तर परिवर्तन के दौर से गुजर रही है।

21वीं सदी की अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था का एक सकरात्मक पहलू यह है कि विश्व जनमत के उदय ने आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के 'संकीर्ण राष्ट्रवाद' एवं 'आक्रामक प्रवृत्ति' पर नियन्त्रण स्थापित करने का प्रयन्त किया है और यह प्रयत्न अभी भी जारी है। तकनीकी क्रान्ति के परिणामरूवरूप यातायात, कृषि, संचार, औद्योगिक एवं सैनिक क्षेत्रों में हुए क्रान्तिकारी विकासों ने भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को परिवर्तित कर दिया है। अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाने की प्रवृत्ति जागरूक हुई है। इस अन्तर्राष्ट्रीय निर्भरता ने जहाँ एक ओर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विशुद्ध 'विश्वस्तरीय स्वरूप' की स्थापना की है वहीं दूसरी ओर विश्व में शान्तिपूर्ण सहयोगात्मक सम्बन्धों की स्थापना की ओर झुकाव भी उत्पन्न किया है।

वर्तमान की एकल–ध्रुवीय व्यवस्था में सम्पूर्ण विश्व व्यवस्था पर अमेरिका का वर्चस्व स्थापित है। कतिपय प्रभावी राष्ट्रवादी तत्वों के वाचजूद अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावना का भी निरन्तर विकास हो रहा है। समकालीन राज्यों की प्रभुसत्ता को विश्व–जनमत, अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता, अन्तर्राष्ट्रीय कानून, एकल–ध्रुवीय व्यवस्था एवं विश्व–शान्ति के प्रति वचनबद्धता आदि कारकों ने सीमित कर दिया है। वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को जातीय हिंसा ने गम्भीर रूप से प्रभावित किया है जो निस्संदेह एक नकारात्मक पहलू है।

Scanned with CamScanner

1.6 सारांश

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध का क्षेत्र अपेक्षाकृत अत्यधिक व्यापक है, जबकि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का क्षेत्र संकुचित है। इस सम्बन्ध में कुछ तथ्य इस प्रकार हैं–

(1) सीमा–अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के केवल एक भाग को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सम्मिलित किया जाता है इसके विपरीत अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन की कोई निश्चित सीमा नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में विभिन्न राष्ट्रों की विदेश नीतियों का अध्ययन किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन के क्षेत्र में मानवीय व्यवहार भी सम्मिलित है, क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय जगत में निर्णय लेने की प्रक्रिया का विशेष महत्व है और महत्वपूर्ण समस्याओं पर निर्णय व्यक्तिगत रूप में या समूह के द्वारा लिये जाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय जीवन के ज्ञात तथ्यों पर उन शक्तियों तथा परिस्थितियों पर रहता है, जो पारस्परिक व्यवहारों को प्रभावित रिते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के अन्तर्गत देशों और राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों के समस्त पक्षों का अध्ययन किया जाता है। ये सभी पक्ष राजनीतिक होने के अतिरिक्त गैर राजनीतिक भी हो सकते हैं। ये शान्तिमय हो सकते हैं अथवा संघर्षयुक्त, कानूनी अथवा सांस्कृतिक अथवा आर्थिक अथवा भौगोलिक, सरकारी अथवा गैर सरकारी।

मत– इस सम्बन्ध में प्रमुख मत निम्न प्रकार हैं–

कैवेलर ने कहा है कि इसके अन्तर्गत उन समस्त तथ्यों का समावेश होता है जो किसी न किसी दृष्टिकोण से अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। **क्वीन्सी राइट** ने लिखा है, "अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन में विभिन्न प्रकार के समूहों जैसे– राष्ट्रों, राज्यों, सरकारों, जनता, प्रदेशों, सन्धि व्यवस्थाओं, परिसंघों, अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों तथा सांस्कृतिक, धार्मिक और औद्योगिक संगठनों का भी समावेश होता है। अतएव अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का विषय–क्षेत्र केवल विभिन्न

Scanned with CamScanner

राज्यों की सरकारों के आपसी सम्बन्धों तक ही सीमित नहीं है, जबकि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का क्षेत्र यहाँ तक सीमित है।"

(2) निकटता– वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति परस्पर निकट आ रहे हैं। दोनो की आधारभूत चिन्ता समान है। दोनों विश्व में स्थायी शान्ति स्थापित करने के लिये समान रूप से चिन्तित हैं। इसी कारण, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के राजनीतिक पक्ष के अध्ययन में रूचि रखने वाले लोगों को उसके गैर–राजनीतिक पक्ष का भी अध्ययन करना होता है, अर्थात् जो व्यक्ति अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन करना चाहता है, उसे कुछ अंश में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का भी अध्ययन करना चाहिये।

डॉ0 विबासि ने यह आशा व्यक्त की है कि जब विश्व में शाश्वत शान्ति स्थापित हो जायेगी और विश्व राज्य की कल्पना साकार होगी तो हो सकता है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अन्तर समाप्त हो जाये।

हैराल्ड तथा **स्प्राउट** के मनानुसार अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध में दो देशों के मध्य के समस्त मानवीय सम्बन्ध आ जाते हैं। इसके विपरीत, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में केवल विभिन्न देशों की राजनीति का समावेश होता है। इसमें विभिन्न राज्यों के कूटनीतिक तथा राजनीतिक सम्बन्धों पर ही विचार किया जाता है।

Scanned with CamScanner